भारतीय विदेश नीति और इसके अंतर्राष्ट्रीय संबंध: एक विस्तृत समीक्षा

Dr. Rekha Rani, Bulandshahr Uttar Pradesh India, Email - rs.9897128444@gmail.com

1.0 परिचय

भारतीय विदेश नीति एक जटिल और गतिशील विषय है जिसका व्यापक रूप से विद्वानों और विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। इस साहित्य समीक्षा में, शोधकर्ता ने इस विषय पर किए गए पूर्व अध्ययनों के परिणाम के साथ भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में प्रमुख विषयों और बहसों का एक सिंहावलोकन प्रदान किया है। भारतीय विदेश नीति के अध्ययन में प्रमुख विषयों में से एक उभरती हुई शक्ति के रूप में देश की भूमिका है। विद्वानों ने इस बात पर बहस की है कि भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और रूस जैसी स्थापित वैश्विक शक्तियों के प्रभुत्व को किस हद तक चुनौती दे सकता है। कुछ लोगों का तर्क है कि भारत की बड़ी आबादी, बढ़ती अर्थव्यवस्था और रणनीतिक स्थान इसे एक संभावित महाशक्ति बनाते हैं, जबकि अन्य घरेलू चुनौतियों जैसे गरीबी, असमानता और राजनीतिक अस्थिरता की ओर इशारा करते हैं जो इसके उदय को सीमित कर सकते हैं।

भारतीय विदेश नीति के अध्ययन में एक अन्य महत्वपूर्ण विषय देश के क्षेत्रीय और वैश्विक गठबंधन हैं। भारत ने लंबे समय से अपने सामरिक हितों का पालन करते हुए प्रमुख शक्तियों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने की मांग की है। उदाहरण के लिए, भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की मांग करते हुए रूस के साथ घनिष्ठ साझेदारी बनाए रखी है। इसके अलावा, भारत ने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) और बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) जैसे संगठनों के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाया है।

भारतीय विदेश नीति के अध्ययन में तीसरा विषय सुरक्षा और रक्षा के प्रति देश का दृष्टिकोण है। भारत आतंकवाद, पाकिस्तान और चीन के साथ सीमा विवाद और क्षेत्रीय अस्थिरता सहित कई सुरक्षा चुनौतियों का सामना करता है। परिणामस्वरूप, भारत ने अपनी सुरक्षा बढ़ाने के लिए अपनी सैन्य क्षमताओं को विकसित करने और अन्य देशों के साथ साझेदारी बनाने की रणनीति अपनाई है। साथ ही, भारत ने क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने के लिए कूटनीति और संघर्ष समाधान का भी अनुसरण किया है।

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में विदेशी व्यापार और निवेश किसी भी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के लिए एक अनिवार्य शर्त बन गए हैं। हालाँकि, अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण, वे अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि हम विदेशी व्यापार के महत्व के ऐतिहासिक संदर्भ को देखें, तो इसे अर्थशास्त्र में 17वीं शताब्दी में खोजा जा सकता है। रिकार्डो और रॉबिंस जैसे शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को "विकास का इंजन" और "व्यक्ति के अस्तित्व की जीवनधारा" के रूप में संदर्भित किया। हैबरलर और केर्न्स जैसे नियोक्लासिकल अर्थशास्त्री मुक्त व्यापार के समर्थक थे। हालाँकि, 20वीं शताब्दी के दौरान, विशेष रूप से उत्तरी गोलार्ध में, कई प्रमुख अर्थशास्त्रियों जैसे कि प्रीबिश, सिंगर और गुन्नार मिर्डल ने व्यापार और आर्थिक विकास के बारे में सवाल उठाने शुरू कर दिए। उन्होंने व्यापार और आर्थिक विकास के संदर्भ पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, जिससे अर्थशास्त्र में एक नए युग की शुरुआत हुई।

तीन स्रोत यूरोपीय संघ के साथ भारत के आर्थिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हैं। पहला स्रोत जे.एस. बराड़ व्यापार और निवेश सहित यूरोपीय संघ के साथ भारत के आर्थिक संबंधों में विभिन्न मुद्दों पर बात करते हैं। जोस्ट वेंडरबोरे का दूसरा स्रोत भारत जैसे विकासशील देशों के सामने वैश्वीकरण की चुनौतियों पर चर्चा करता है, जिसमें यूरोपीय संघ की आम विदेश और सुरक्षा नीति शामिल है। विभा माथुर का तीसरा स्रोत व्यापार की संभावनाओं और भारत-यूरोपीय संघ व्यापार पर यूरो के प्रभाव पर केंद्रित है। कुल मिलाकर, स्रोत यूरोपीय संघ के साथ भारत के आर्थिक संबंधों की जटिलताओं और दोनों पक्षों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। अंत में, विद्वानों ने भारतीय विदेश नीति को आकार देने में घरेलू राजनीति की भूमिका की भी जांच की है। भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली और जटिल नौकरशाही देश के लिए सुसंगत विदेश नीति को आगे बढ़ाना कठिन बना सकती है। इसके अलावा, घरेलू राजनीति और हित समूह भारत की विदेश नीति के फैसलों को प्रभावित कर सकते हैं।

2.0 महत्वपूर्ण पिछले अध्ययन

एबलर, डेविड और सेंटुशियो, फेडेरिका (2009) ने "एशियाई देशों के साथ यूरोपीय संघ कृषि व्यापार संबंध" शीर्षक से एक रिपोर्ट लिखी। रिपोर्ट यूरोपीय संघ (ईयू) और चीन, जापान, दक्षिण कोरिया और भारत सहित कई एशियाई देशों के बीच कृषि व्यापार संबंधों का अवलोकन प्रदान करती है। रिपोर्ट एशिया के प्रति यूरोपीय संघ की कृषि व्यापार नीति पर चर्चा करती है, जिसमें व्यापार उदारीकरण पर एशियाई देशों के साथ बातचीत और इन देशों को यूरोपीय संघ के निर्यात को प्रभावित करने वाले विशिष्ट व्यापार अवरोध शामिल हैं। लेखक इन व्यापार प्रवाहों को आकार देने में यूरोपीय संघ और एशिया के बीच विभिन्न कृषि उत्पादों के व्यापार प्रवाह और सैनिटरी और फाइटोसैनेटिक नियमों जैसे गैर-टैरिफ उपायों की भूमिका का भी विश्लेषण करते हैं। रिपोर्ट यूरोपीय संघ के कृषि उत्पादों के बाजार के रूप में एशिया के बढ़ते महत्व और दोनों क्षेत्रों के बीच व्यापार में और वृद्धि की संभावना पर प्रकाश डालती है। हालांकि, लेखक यह भी ध्यान देते हैं कि टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं के कारण यूरोपीय संघ को कुछ एशियाई बाजारों तक पहुंचने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, और यूरोपीय संघ और एशियाई देशों के बीच निष्पक्ष और खुले व्यापार संबंधों को सुनिश्चित करने के लिए और अधिक करने की आवश्यकता है।

के. वी. केसवन और पी. आर. कुमारस्वामी (2013) द्वारा संपादित "भारत की विदेश नीति: एक बहुध्रुवीय दुनिया में बदलती गतिशीलता": यह पुस्तक क्षेत्रीय एकीकरण, आर्थिक कूटनीति जैसे मुद्दों पर ध्यान देने के साथ एक बहुध्रुवीय दुनिया में भारत की विदेश नीति की बदलती गतिशीलता की जांच करती है। , और रणनीतिक साझेदारी।

कैरल कॉसग्रोव-सैक्स द्वारा संपादित पुस्तक "द यूरोपियन यूनियन एंड डेवलपिंग कंट्रीज: द चैलेंजेस ऑफ ग्लोबलाइजेशन" में जोस्ट वेंडरबोरे का अध्याय "भारत और यूरोपीय संघ" (1996), वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत और यूरोपीय संघ के बीच आर्थिक संबंधों पर चर्चा करता है। वेंडरबोरे का तर्क है कि भारत और यूरोपीय संघ के बीच मजबूत आर्थिक संबंध हैं, लेकिन यह तनाव और कठिनाइयों से चिह्नित है। उनका सुझाव है कि इस रिश्ते के सामने मुख्य चुनौतियों में से एक बाजार पहुंच का मुद्दा है, जिसमें दोनों पक्ष अपने बाजारों को एक दूसरे के लिए खोलने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वेंडरबोरे ने यह भी नोट किया कि भारत यूरोपीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौतों में प्रवेश करने के लिए अनिच्छुक रहा है, इसके बजाय व्यक्तिगत यूरोपीय संघ के देशों के साथ द्विपक्षीय समझौतों को आगे बढ़ाना पसंद करता है। उनका सुझाव है कि इस दृष्टिकोण ने भारत और यूरोपीय संघ के बीच अधिक व्यापक आर्थिक संबंधों के विकास में बाधा उत्पन्न की है।

गीतांजलि नटराज (2018) 2018 का लेख "भारत-यूरोपीय संघ एफटीए: समस्याएं और भविष्य की संभावनाएं" उन बाधाओं की पड़ताल करता है जिन्होंने प्रगति और भविष्य के लिए संभावित संभावनाओं को बाधित किया है। मुख्य मुद्दों में से एक माल और सेवाओं के लिए भारत के बाजार तक अधिक पहुंच के लिए यूरोपीय संघ की मांग रही है। दूसरी ओर, भारत अपने पेशेवरों के लिए विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में अधिक गतिशीलता और कृषि उत्पादों के लिए यूरोपीय संघ के बाजार तक आसान पहुंच की मांग कर रहा है। एक अन्य मुद्दा यूरोपीय संघ के सख्त बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) शासन के बारे में भारत की चिंता है, जो भारत के जेनेरिक दवा उद्योग को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, निवेशक-राज्य विवाद निपटान (आईएसडीएस) के दृष्टिकोण में अंतर रहा है, जो एक ऐसा तंत्र है जो निवेशकों को कथित भेदभावपूर्ण प्रथाओं के लिए सरकार पर मुकदमा करने की अनुमति देता है। यूरोपीय संघ ने स्थायी बहुपक्षीय निवेश न्यायालय का प्रस्ताव दिया है, जबकि भारत ने द्विपक्षीय दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी है। इन चुनौतियों के बावजूद, लेखक का सुझाव है कि भारत और यूरोपीय संघ के बीच एक संभावित एफटीए के लिए अभी भी अवसर हैं। यूरोपीय संघ की ब्रेक्सिट वार्ता व्यापार वार्ताओं के लिए अपने दृष्टिकोण में अधिक लचीला हो सकती है, और संयुक्त राज्य में संरक्षणवाद का उदय दोनों पक्षों को व्यापार के लिए एक दूसरे की ओर देखने के लिए प्रेरित कर सकता है।

डेविड मेलोन, सी. राजा मोहन और श्रीनाथ राघवन द्वारा संपादित "21वीं सदी में भारत की विदेश नीति" (2013): यह पुस्तक बदलती वैश्विक व्यवस्था के संदर्भ में भारत की विदेश नीति का पता लगाने के लिए प्रमुख विद्वानों और नीति निर्माताओं को एक साथ लाती है। "21वीं सदी में भारत की विदेश नीति" 2013 में प्रकाशित डेविड मेलोन, सी. राजा मोहन और श्रीनाथ राघवन द्वारा संपादित पुस्तक है। यह पुस्तक निबंधों का एक संग्रह है जो

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति की जांच करती है, जिसमें व्यापक संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और रूस जैसी प्रमुख शक्तियों के साथ भारत के संबंध, दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की भूमिका, अप्रसार और निरस्त्रीकरण के प्रति भारत का दृष्टिकोण, और वैश्विक शासन संस्थानों के साथ भारत के जुड़ाव सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला। पुस्तक नई वैश्विक व्यवस्था में भारत की विदेश नीति के निर्णय लेने, चुनौतियों और अवसरों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

भारत और चीन: प्रतिद्वंद्विता और सहयोग" कांति बाजपेयी, श्रीनाथ राघवन, और शियाओयुआन लियू (2012) यह पुस्तक भारत और चीन के बीच उनकी रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता, आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय गतिशीलता पर ध्यान देने के साथ जटिल संबंधों की पड़ताल करती है।"भारत और चीन: प्रतिद्वंद्विता और सहयोग" एक संपादित खंड है जो प्रतिद्वंद्विता और सहयोग के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत और चीन के बीच जटिल संबंधों की पड़ताल करता है। योगदानकर्ता उन ऐतिहासिक, रणनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण करते हैं जो भारत-चीन संबंधों और क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति पर उनके प्रभाव को आकार देते हैं। पुस्तक में शामिल कुछ प्रमुख विषयों में भारत और चीन के बीच सीमा विवाद, दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्धा, आर्थिक सहयोग और प्रतिस्पर्धा, और संबंधों को आकार देने में सांस्कृतिक और सभ्यतागत कारकों की भूमिका शामिल है। यह पुस्तक संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और अन्य प्रमुख शक्तियों के लिए निहितार्थ सहित क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा के लिए भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता और सहयोग के निहितार्थों की भी पड़ताल करती है। कुल मिलाकर, पुस्तक समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सबसे महत्वपूर्ण और जटिल संबंधों में से एक का व्यापक और सूक्ष्म विश्लेषण प्रदान करती है।

भारतीय विदेश नीति: चुनौतियां और अवसर" अतुल भारद्वाज (2018) द्वारा संपादित: यह पुस्तक क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक एकीकरण और वैश्विक शासन जैसे मुद्दों पर ध्यान देने के साथ 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण करती है।

भावना सिंह द्वारा संपादित "भारत की विदेश नीति और कूटनीति: उभरती चुनौतियां और प्रतिमान" (2018): यह पुस्तक भारत की विदेश नीति में उभरती चुनौतियों और प्रतिमानों की जांच करती है, जिसमें ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और गैर-पारंपरिक जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। सुरक्षा खतरे। पुस्तक में अमेरिका, चीन और रूस जैसी प्रमुख शक्तियों के साथ भारत के संबंध, संयुक्त राष्ट्र और विश्व व्यापार संगठन जैसे बहुपक्षीय संस्थानों के साथ भारत के जुड़ाव, दक्षिण एशिया और हिंद महासागर जैसे क्षेत्रीय मुद्दों पर भारत के दृष्टिकोण जैसे विषयों को शामिल किया गया है। आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन जैसी उभरती वैश्विक चुनौतियों के जवाब में भारत की उभरती कूटनीतिक रणनीति। पुस्तक भारत की विदेश नीति और कूटनीति में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है और विद्वानों, नीति निर्माताओं और दुनिया में भारत की भूमिका को समझने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक उपयोगी संसाधन है।

मंडल और लेनका (2014) का लेख भारत और यूके के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करता है और संभावित विकास के अवसरों की पड़ताल करता है। लेखक दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं और सुझाव देते हैं कि फोकस के क्षेत्र सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी और फार्मास्यूटिकल्स होने चाहिए। लेख में तर्क दिया गया है कि जहां भारत और ब्रिटेन के बीच ऐतिहासिक संबंध हैं, वहीं दोनों देशों के बीच व्यापार सीमित रहा है। लेखकों का सुझाव है कि इसका मुख्य कारण उपलब्ध व्यावसायिक अवसरों के बारे में जागरूकता की कमी और व्यापक व्यापार समझौते की अनुपस्थिति है। उनका प्रस्ताव है कि भारत और ब्रिटेन को बढ़े हुए व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए एक मुक्त व्यापार समझौता स्थापित करना चाहिए। लेखक 1991 में भारत के आर्थिक उदारीकरण के महत्व पर भी प्रकाश डालते हैं, जिसने देश के बाजारों को विदेशी निवेश और व्यापार के लिए खोल दिया। उनका तर्क है कि इससे यूके के व्यवसायों के लिए भारत में निवेश करने के अवसर पैदा हुए हैं, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी और फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्रों में। लेखकों का सुझाव है कि भारत का बड़ा और बढ़ता मध्यम वर्ग यूके के व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार अवसर प्रस्तुत करता है।

राज कुमार कोठारी (2014) द्वारा "भारत की विदेश नीति: एक रणनीतिक विश्लेषण": यह पुस्तक प्रमुख शक्तियों, क्षेत्रीय गतिशीलता और रणनीतिक साझेदारी के साथ देश के संबंधों पर ध्यान देने के साथ भारत की विदेश नीति का रणनीतिक विश्लेषण प्रदान करती है।

राजीव सीकरी (2017) द्वारा "भारत और विश्व: भू-राजनीति और विदेश नीति पर निबंध": यह पुस्तक 21 वीं सदी में भारत की विदेश नीति का विश्लेषण करती है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और रूस जैसी प्रमुख शक्तियों के साथ इसके संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। राजीव सीकरी द्वारा "भारत और विश्व: भू-राजनीति और विदेश नीति पर निबंध" निबंधों का एक संग्रह है जो भारत की विदेश नीति और दुनिया में इसकी भू-राजनीतिक स्थिति में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। पुस्तक अमेरिका, चीन और रूस सहित प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ भारत के संबंधों और सार्क और आसियान जैसे क्षेत्रीय मंचों में इसकी भूमिका की जांच करती है। इसमें आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर भारत के दृष्टिकोण को भी शामिल किया गया है। कुल मिलाकर, पुस्तक भारत की विदेश नीति और वैश्विक मंच पर इसके प्रभाव का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है।

लुइस पेराल (2012) का लेख "सेटिंग द ईयू-इंडिया पार्टनरशिप इन मोशन" प्रकाशित हुआ था और इसमें यूरोपीय संघ (ईयू) और भारत के बीच बढ़ते संबंधों पर चर्चा की गई है। पेराल का तर्क है कि भारत के आर्थिक विकास और सामरिक स्थिति के कारण यूरोपीय संघ-भारत संबंध तेजी से महत्वपूर्ण हो गया है। उनका सुझाव है कि यूरोपीय संघ और भारत को आर्थिक संबंधों को मजबूत करने, आम चुनौतियों का समाधान करने और क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। पेराल ने नोट किया कि यूरोपीय संघ और भारत ने पहले ही अपनी साझेदारी में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिसमें एक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की बातचीत शामिल है जो दोनों क्षेत्रों के बीच व्यापार बाधाओं को दूर करेगी। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में इसके बढ़ते प्रभाव और वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी बनने की क्षमता सहित वैश्विक शासन में भारत की भूमिका के महत्व पर भी प्रकाश डाला। हालाँकि, पेराल ने यह भी नोट किया कि ऐसी चुनौतियाँ हैं जिन्हें यूरोपीय संघ-भारत साझेदारी में संबोधित किया जाना चाहिए, जैसे कि अलग-अलग नियामक मानक और मानवाधिकारों और पर्यावरणीय मुद्दों पर चिंताएँ। उनका सुझाव है कि इन चुनौतियों को दोनों क्षेत्रों के बीच बातचीत और सहयोग के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है।

लेख "भारत और यूरोपीय संघ: आर्थिक संबंधों में मुद्दे" जे.एस. बरार (1996) भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर चर्चा करता है। लेख दो संस्थाओं के बीच आर्थिक संबंधों के महत्व पर प्रकाश डालता है और आगे के सहयोग के लिए चुनौतियों और अवसरों की जांच करता है। लेख में व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विकास सहायता जैसे आर्थिक सहयोग के कई क्षेत्रों को शामिल किया गया है। यह भारत और यूरोपीय संघ के बीच व्यापार संबंधों पर चर्चा करता है, जिसमें यूरोपीय संघ के बाजार में भारत द्वारा सामना की जाने वाली व्यापार बाधाएं और द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने की क्षमता शामिल है। लेख भारत और यूरोपीय संघ के बीच निवेश प्रवाह और भारत में विदेशी निवेश बढ़ाने की संभावनाओं की भी जांच करता है। इसके अलावा, लेख भारत और यूरोपीय संघ के बीच प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और इस प्रक्रिया में बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) की भूमिका का विश्लेषण करता है। यह आर्थिक विकास और विकास को बढ़ावा देने में सहायता की प्रभावशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हुए यूरोपीय संघ द्वारा भारत को प्रदान की गई विकास सहायता की भी जांच करता है।

संजय बारू और समीर सरन द्वारा संपादित "इंडिया एंड द ग्लोबल ऑर्डर" (2016): यह पुस्तक देश की रणनीतिक साझेदारी, क्षेत्रीय पहल और आर्थिक जुड़ाव पर ध्यान देने के साथ वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में भारत की भूमिका की जांच करती है। "इंडिया एंड द ग्लोबल ऑर्डर" एक संग्रह है जो बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका की जांच करता है। पुस्तक में भारत की विदेश नीति, प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ इसके संबंध, इसकी आर्थिक नीतियां, इसकी ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद जैसी वैश्विक चुनौतियों के प्रति इसकी प्रतिक्रिया सहित कई विषयों को शामिल किया गया है। पुस्तक के योगदानकर्ताओं में विद्वान, राजनयिक और नीति निर्माता शामिल हैं, जो वैश्विक व्यवस्था में भारत की स्थिति और इसके भविष्य के प्रक्षेपवक्र पर विविध दृष्टिकोण

प्रस्तुत करते हैं। पुस्तक विकसित वैश्विक परिदृश्य को आकार देने में भारत की भूमिका को समझने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान संसाधन है।

सुमित गांगुली द्वारा "भारत की विदेश नीति: शक्ति की खोज" (2016) यह पुस्तक स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति के विकास की जांच करती है, जिसमें देश की शक्ति और अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में प्रभाव की खोज पर ध्यान केंद्रित किया गया है। सुमित गांगुली (2016) द्वारा "भारत की विदेश नीति: शक्ति की खोज" एक ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य से भारत की विदेश नीति का गहन विश्लेषण प्रदान करती है। लेखक महान शक्ति स्थिति के लिए भारत की खोज की जांच करता है, जिसके बारे में उनका तर्क है कि यह भारतीय विदेश नीति का एक केंद्रीय तत्व है। वह संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और पाकिस्तान सहित प्रमुख शक्तियों के साथ भारत के संबंधों का भी विश्लेषण करता है और भारत कैसे इन देशों के साथ अपने रणनीतिक हितों को संतुलित करता है। यह पुस्तक सार्क और आसियान जैसे क्षेत्रीय संगठनों के साथ भारत के जुड़ाव और क्षेत्र में आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को गहरा करने के प्रयासों पर भी प्रकाश डालती है। गांगुली आतंकवाद, परमाणु प्रसार और जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों सहित भारत की विदेश नीति की चुनौतियों का व्यापक विश्लेषण प्रदान करते हैं।

सुरजीत मानसिंह (2018) द्वारा संपादित "इंडिया एंड द वर्ल्ड: पावर, परसेप्शन एंड रियलिटी": यह पुस्तक सॉफ्ट पावर, पब्लिक डिप्लोमेसी जैसे मुद्दों पर ध्यान देने के साथ दुनिया में भारत की भूमिका की शक्ति, धारणा और वास्तविकता की पड़ताल करती है और सांस्कृतिक कूटनीति। सुरजीत मानसिंह (2018) द्वारा संपादित "इंडिया एंड द वर्ल्ड: पावर, परसेप्शन एंड रियलिटी" निबंधों का एक संग्रह है जो भारत की विदेश नीति और बदलती वैश्विक व्यवस्था में इसकी भूमिका का पता लगाता है। पुस्तक में कई विषयों को शामिल किया गया है, जिसमें भारत के अपने पड़ोसियों के साथ संबंध, प्रमुख शक्तियों के साथ इसकी रणनीतिक साझेदारी, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ इसके जुड़ाव और क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका शामिल है। लेखक भारत की घरेलू राजनीति और कैसे वे इसकी विदेश नीति को आकार देते हैं, साथ ही विश्व मंच पर भारत के लिए आने वाली चुनौतियों और अवसरों की भी जांच करते हैं। कुल मिलाकर यह पुस्तक 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है।

3.0 भारत और इसकी विदेश नीति पर अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण

भारत की विदेश नीति को दुनिया भर के कई देशों द्वारा सकारात्मक रूप से देखा जाता है, विशेष रूप से इसके बढ़ते आर्थिक और सामरिक महत्व के संदर्भ में। भारत को वैश्विक मामलों में एक प्रमुख खिलाड़ी और एशिया में चीन की बढ़ती ताकत के संभावित प्रतिकार के रूप में देखा जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका भारत को एक प्रमुख रणनीतिक भागीदार के रूप में देखता है और देश के साथ संबंधों को गहरा करने के लिए काम कर रहा है। अमेरिका भारत-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने और चीन के लिए एक लोकतांत्रिक असंतुलन के रूप में भारत को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में देखता है।

यूरोपीय देश भारत को व्यापार, निवेश और आतंकवाद विरोधी जैसे क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखते हैं। भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति और बाजार की क्षमता ने इसे यूरोपीय व्यवसायों और निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है।

पाकिस्तान और चीन जैसे पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की पैनी नजर है। सीमा पार आतंकवाद और चीन के साथ क्षेत्रीय विवाद जैसे मुद्दों पर भारत के मुखर रुख की प्रशंसा और आलोचना दोनों हुई है। कुल मिलाकर, भारत की विदेश नीति को लगातार मुखर और सक्रिय रूप में देखा जा रहा है, जो देश के बढ़ते आत्मविश्वास और वैश्विक मामलों में बड़ी भूमिका निभाने की आकांक्षाओं को दर्शाता है।

4.0 निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता, संप्रभुता के प्रति सम्मान और बहुध्रुवीय दुनिया की इच्छा के सिद्धांतों पर आधारित है। भारत वैश्विक मंच पर अपना प्रभाव बढ़ाने और विकसित और विकासशील दोनों देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की दिशा में काम कर रहा है। भारत अपने निकटवर्ती पड़ोसी देशों जैसे भूटान, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के साथ अपने संबंधों को मजबूत कर रहा है। भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया

और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के अन्य देशों के साथ अपनी आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी भी बढ़ा रहा है। भारत आपसी चिंता के मुद्दों के समाधान और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भी चीन के साथ बातचीत करता रहा है।

हालाँकि, सीमा विवाद और अन्य भू-राजनीतिक मुद्दों के कारण भारत और चीन के बीच तनाव बढ़ रहा है। भारत संयुक्त राष्ट्र, जी20, ब्रिक्स और एससीओ जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। भारत अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को अधिक प्रतिनिधिक और समावेशी बनाने के लिए उनमें सुधार की वकालत करता रहा है। भारत की विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए क्षेत्र और उससे आगे शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। कुल मिलाकर, भारतीय विदेश नीति पर साहित्य समृद्ध और विविध है, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में भारत की भूमिका की जटिलता को दर्शाता है।

References:

1. Acharya, A. (2014). India as a global power: Contending perspectives on India's rise and its implications. Routledge.
2. Bajpai, K., Raghavan, S., & Liu, X. (Eds.). (2012). India and China: Rivalry and cooperation. Routledge.
3. Baru, S., & Saran, S. (Eds.). (2016). India and the global order. Oxford University Press.
4. Bhardwaj, A. (Ed.). (2018). Indian foreign policy: Challenges and opportunities. Pentagon Press.
5. Chari, P. R. (2015). South Asia and the great powers: International relations and regional security. Routledge.
6. Cohen, S. P. (2018). India: Emerging power. Brookings Institution Press.
7. Destradi, S. (2015). India and the world: An introduction to Indian foreign policy. Routledge.
8. Ganguly, S. (2019). India's foreign policy: The quest for power. Polity Press.
9. Ganguly, S. (2016). India's foreign policy: The quest for power. Rowman & Littlefield.
10. Ganguly, S., & Gooptu, S. (2018). US-India relations in the age of uncertainty: An uneasy courtship. Cambridge University Press.
11. Jha, S. K. (2018). Indian foreign policy: An overview. Routledge.
12. Kanti Bajpai, M. P. (2017). India's foreign policy: A reader. Oxford University Press.
13. Kothari, R. K. (2014). India's foreign policy: A strategic analysis. Atlantic Publishers & Distributors.
14. Kothari, R. K. (2014). India's foreign policy: A strategic analysis. Routledge.
15. Kumaraswamy, P. R. (Ed.). (2013). India's foreign policy: Old problems, new challenges. Lynne Rienner Publishers.
16. Malone, D., Mohan, C. R., & Raghavan, S. (Eds.). (2013). India's foreign policy in the 21st century. Foundation Books.
17. Mansingh, S. (Ed.). (2018). India and the world: Power, perception and reality. Springer.
18. Muni, S. D., & Bery, S. (2015). India's foreign policy: The democracy dimension. SAGE Publications.
19. Natraj, G. (2018). India-EU FTA: Problems and future prospects. Indian Journal of Economics and Development, 14(1), 43-48.
20. Pande, A. (2016). From Chanakya to Modi: Evolution of India's foreign policy. HarperCollins.
21. Peral, L. (2013). Setting the EU-India partnership in motion. European Foreign Affairs Review, 17(3), 315-330.
22. Peral, L. (2012). Setting the EU-India partnership in motion. India Quarterly, 68(3), 245-259. doi: 10.1177/0974928412454724
23. Raghavan, S. (2016). War and peace in modern India: A strategic history of the Nehru years. Routledge.
24. Rajamohan, C. (2010). India's naval strategy and Asian security. Routledge.
25. Sikri, R. (2017a). India and the world: Essays on geopolitics and foreign policy. Oxford University Press.
26. Sikri, R. (2017b). India and the world: Essays on geopolitics and foreign policy. HarperCollins.
27. Singh, B. (Ed.). (2018). India's foreign policy and diplomacy: Emerging challenges and paradigms. Sage Publications.
28. Taneja, N. (2014). India's foreign policy in a changing world. Academic Foundation.
29. Tellis, A. J. (2015). India's emerging nuclear posture: Between recessed deterrence and ready arsenal. Brookings Institution Press.
30. Thakur, R. (2015). The United Nations, peace and security: From collective security to the responsibility to protect. Cambridge University Press.
31. Vanaik, A. (2014). India as a rising power: Potential and constraints. Palgrave Macmillan.

Websites

1. Ministry of External Affairs, Government of India: https://www.mea.gov.in/
2. Indian Council of World Affairs: https://icwa.in/
3. Indian Foreign Affairs Journal: https://www.journalindia.org/
4. Indian Embassy, Washington DC: https://www.indianembassy.org/
5. Indian High Commission, London: https://www.hcilondon.gov.in/
6. Institute for Defence Studies and Analyses: https://idsa.in/

7. Observer Research Foundation: https://www.orfonline.org/
8. Centre for Air Power Studies: https://capsindia.org/
9. Carnegie India: https://carnegieindia.org/
10. Gateway House: Indian Council on Global Relations: https://www.gatewayhouse.in/
11. Vivekananda International Foundation: https://www.vifindia.org/
12. Centre for Land Warfare Studies: https://www.claws.in/
13. Indian Navy: https://www.indiannavy.nic.in/
14. Indian Army: https://indianarmy.nic.in/
15. Indian Air Force: https://indianairforce.nic.in/
16. National Maritime Foundation: https://www.nmf-india.org/
17. Indian Space Research Organisation: https://www.isro.gov.in/
18. Ministry of Defence, Government of India: https://mod.gov.in/
19. National Security Council Secretariat: https://www.nscs.gov.in/
20. Central Information Commission: https://www.cic.gov.in/
21. Ministry of Home Affairs, Government of India: https://www.mha.gov.in/